International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

हिंदी साहित्य में भारत की समृद्ध संस्कृति का विश्लेषण

डॉ सिद्धि जोशी

सह-आचार्य हिन्दी

राजकीय कन्या महाविद्यालय, झुंझुनूं

सार

भारत की समृद्ध संस्कृति हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण विषय रही है। हिंदी साहित्य ने भारतीय संस्कृति की विविधता, गहराई और जटिलताओं को विस्तृत और सजीव रूप में प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन का उद्देश्य हिंदी साहित्य में भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करना है। हिंदी साहित्य के विभिन्न कालखंडों में भारतीय संस्कृति की झलक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। प्रारंभिक काल से लेकर आधुनिक युग तक, हिंदी साहित्य ने धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों को गहराई से उकेरा है। कविताओं, कहानियों, नाटकों और उपन्यासों के माध्यम से हिंदी साहित्यकारों ने भारतीय संस्कृति की विविधता को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। तुलसीदास, कबीर, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा जैसे रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया है। तुलसीदास की 'रामचरितमानस' ने रामायण की कहानी के माध्यम से भारतीय संस्कृति की धार्मिक और नैतिक मूल्यों को प्रस्तुत किया है। कबीर की साखियों और दोहों ने सामाजिक और धार्मिक पाखंडों पर प्रहार करते हुए भारतीय समाज की जटिलताओं को उजागर किया है। प्रेमचंद के उपन्यासों ने ग्रामीण जीवन, गरीबी, और सामाजिक अन्याय को प्रमुखता से उठाया है। आधुनिक युग में, हिंदी साहित्य ने भारतीय संस्कृति की वैश्विक पहचान को भी सामने लाया है। समकालीन लेखकों ने भारतीय प्रवासियों के अनुभवों, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के प्रभावों, और बदलते सामाजिक मूल्यों को अपनी रचनाओं में शामिल किया है।

मुख्य शब्द: *हिंदी साहित्य, भारत, संस्कृति*

परिचय

भारत की समृद्ध संस्कृति हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। हिंदी साहित्य ने भारतीय संस्कृति की विविधता, गहराई और जटिलताओं को अभिव्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह साहित्य न केवल ऐतिहासिक और पारंपरिक पहलुओं को संजोए रखता है, बल्कि आधुनिक परिवर्तनों और सामाजिक परिवर्तनों को भी दर्शाता है। हिंदी साहित्य में, भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को विस्तृत और सजीव रूप में प्रस्तुत किया गया है। धार्मिक, सामाजिक,

आर्थिक, और राजनीतिक परिवर्तनों को हिंदी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में गहराई से उकेरा है। यह अध्ययन भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का हिंदी साहित्य में विश्लेषण करने का प्रयास है, जिसमें विभिन्न कालखंडों के प्रमुख साहित्यकारों और उनकी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज की झलक प्राप्त की जा सके। तुलसीदास, कबीर, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा और समकालीन लेखकों की रचनाओं के माध्यम से यह अध्ययन भारतीय संस्कृति की व्यापकता और विविधता को समझने का एक प्रयास है। हिंदी साहित्य भारतीय समाज का एक दर्पण है, जो इसके ऐतिहासिक, पारंपरिक और आधुनिक पहलुओं को प्रतिबिंबित करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य हिंदी साहित्य में भारतीय संस्कृति की गहरी और व्यापक समझ को विकसित करना है। भारतीय संस्कृति की इस व्यापकता को समझने के लिए हिंदी साहित्य का अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समाज की विभिन्न परतों को उजागर करता है।

ऐतिहासिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य

हिंदी साहित्य में धार्मिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य महत्वपूर्ण स्थान रखता है। तुलसीदास की 'रामचरितमानस' और वेदव्यास की 'महाभारत' जैसी रचनाएं भारतीय धार्मिक जीवन का आधार रही हैं। इन रचनाओं में धार्मिक और नैतिक मूल्यों को अत्यधिक महत्व दिया गया है, जो आज भी भारतीय समाज में प्रासंगिक हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन

प्रेमचंद की रचनाओं में भारतीय समाज की वास्तविकता को प्रकट किया गया है। उनके उपन्यासों जैसे 'गोदान' और 'गबन' में ग्रामीण जीवन, गरीबी, और सामाजिक अन्याय की गहरी समझ प्रस्तुत की गई है। प्रेमचंद ने समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन को अपने साहित्य में जगह दी है, जिससे उनकी रचनाएं समाज के सभी पहलुओं को छूती हैं।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य

आधुनिक हिंदी साहित्य ने भारतीय समाज के बदलते स्वरूप को बखूबी चित्रित किया है। समकालीन लेखकों ने औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, और वैश्वीकरण के प्रभावों को अपनी रचनाओं में शामिल किया है। भारतीय प्रवासियों के अनुभव, नई पीढ़ी के संघर्ष, और बदलते सामाजिक मूल्यों को समकालीन हिंदी साहित्य में प्रमुखता से स्थान मिला है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सांस्कृतिक विविधता

हिंदी साहित्य ने भारतीय संस्कृति की विविधता को भी उजागर किया है। भारत एक बहुभाषी, बहुधर्मी, और बहुसांस्कृतिक देश है, और इस विविधता को हिंदी साहित्य में बखूबी उकेरा गया है। विभिन्न क्षेत्रीय लोककथाएं, परंपराएं, और रीति-रिवाज साहित्य में स्थान पाते हैं, जो भारतीय संस्कृति की गहराई और समृद्धि को प्रकट करते हैं।

हिन्दी साहित्य में भारतीय संस्कृति की अवधारणना

साहित्य संस्कृति का वाहक है, साहित्य में संस्कृति की मनोरम झांकी अपने पूर्व वैभव के साथ चित्रित होती है। किसी भी देष या जाति का साहित्य उसके विचारों और भावनाओं के इतिहास का परिचय देता है। मनुष्य के मानसिक विकास के विविध आयामों में संस्कृति अपना विस्तृत रुप धारण करती है, जिसे प्रकाष में लाने का कार्य साहित्य करता है। डॉ० सरनाम सिंह शर्मा ने "साहित्य को संस्कृति का इतिहास कहकर उसे अतीत का प्रतिबिम्ब तथा अनागत का प्रदीप माना है। साहित्य जन-मानस की अन्तबाह्य प्रतिछबियों का प्रकाषन करने वाला ज्ञान राषि का संचित कोष है । इसीलिए वह किसी देष या काल की संस्कृति के ज्ञान का सर्वाधिक प्रमाणिक आधार होता है । साहित्य में संस्कृति के जातीय मनोभाव सुरक्षित तो रहते ही है, इसके अतिरिक्त साहित्य मनुष्य को उस रागात्मक ऐष्वर्य की स्थिति तक पहुँचाता है और मानव को मानव के रुप में जीने की षिक्षा देता है।

"जड़ चेतन जग जीव जगत सकल राममय जानि ।

बंदऊ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि ।।

अर्थात् भारत में न केवल मानव मात्र में बल्कि चेतन, अचेतन, पदार्थ में भी बन्धुत्व के दर्षन होते है। जड़ चेतन सभी आत्मरुप हैं। आत्मा का तादात्म्य ईष्वर से है ।

सनातन संस्कृति के संवाहक भारतीय ऋषि व महर्षियों ने मानव-मानव में कभी भी वेद नहीं माना तथा सम्पूर्ण मानव को एक परिवार का अंग मानकर सभी में एक दूसरे के प्रति दया, प्रेम, सहयोग, सहिष्णुता आदि भावनाओं को बलवती बनाने के लिए उदार चरित्र के निर्माण के लिए बतलाते है कि दूसरों का कल्याण करना ही परम धर्म है

"परहित सरिस धरम नहीं भाई । पर पीड़ा सम नहिं अधमई ।। "

भारतीय संस्कृति विष्व की समस्त संस्कृतियों से प्राचीन एवं अक्षुण संस्कृति है । संस्कृति वह इकाई है जिसमें ज्ञान, विज्ञान, कला, नैतिकता, रीति-रिवाज एवं समाज के सदस्य के रुप में मनुष्य के द्वारा अर्जित अन्य सभी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

योग्यताएँ शामिल है। भारतीय संस्कृति सनातन संस्कृति है अर्थात्– नित्य, निरन्तर शाश्वत एवं स्थायी । वैदिक काल से लेकर अद्यावधि तक यह निरन्तर प्रवाहित धारा की भाँति कभी न रुकने वाली परम्परा रही है । "संस्कृति उन समस्त आदर्शो की समाष्टि है जो मनुष्य को मानवतावादी दृष्टि प्रदान करती है। यह मानवतावादी दृष्टि समस्त जीवन व्यापारों और सामाजिक सम्बन्धों में व्याप्त रहती है।" भारतीय संस्कृति देष, जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदि सभी सीमाओं से परे है। भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विष्व के मानव जाति में एकता, प्रेम एवं साहचर्य का भाव भारती रही है। इसकी विरारटा का प्रमाण इसी उद्घोष के साथ प्रत्यक्ष होता है

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कष्चिद् दुःखभाग्भवेत् । ।"

जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाष से निरन्तर विष्व को प्रकाषित करता रहता है, उसी प्रकार भारतीय संस्कृति निरन्तर एवं शाष्वत प्रकाष पुंज के रुप में विष्व मानव समाज की अज्ञानरुपी अंधकार के ज्ञानरुपी प्रकाष फैलाने का कार्य करती रहती है।

"आतम संस्कृतिर्वाव शिल्पानि, एतैर्य जमान आत्मांन संस्कृते: "

अर्थात संस्कृति वह शक्ति है जो इस उन्नयन कर साधना को सिद्ध करती है। भारत सदियों से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आधार पर अपनी संस्कृति का विकास करता रहा है। भारतीय संस्कृति के मूल तत्व सहयोग, सहिष्णुता, समन्वयवादिता, नारी का महत्व, सेवा, उदारता, त्याग आदि मानवीय गुण प्रमुख मौलिक तत्व हैं। भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों को सदाश्रेष्ठ माना गया है । इसीलिए आचार परमोधर्म, अहिंसा श्रेष्ठतम धर्म, नहि सत्यात् परोधर्म, परोपकार पुण्याय के आदर्ष स्थापित हुए। डॉ० मंगलदेव शास्त्र के शब्दों में कहे तो "सामाजिक सम्बन्धों में मानवता की दृष्टि से प्रेरणा प्रदान करने वाले उन आदर्शों की समाष्टि को ही संस्कृति समझना चाहिए ।

भारतीय संस्कृति में अहिंसा को सर्वोपरि धर्म माना गया है। इसके मूल में जीवन की व्यापकता का सिद्धान्त है। कबीर दास जी ने दया, प्रेम, विष्वबन्धुत्व की भावना पर विषेष जोर दिया और क्षमा, परोपकार, अहिंसा करना ही नैतिक गुणों का ही उपदेष दिया -

"जहा दया तहाँ धर्म है, जहाँ लोभ तहाँ पाप ।

जहाॅ क्रोध तहाँ काल, जहाँ क्षमा तहाँ आप । ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भारत की अनेकता और विविधता मौलिक तथा सनातन है। यहाॅ मानव - प्रेम, विष्व बन्धुत्व और विष्व की एकता के मंत्र कण-कण में व्याप्त है । भारत विविध नाम, रुप, राग, द्वेष, स्वार्थ आदि के होते हुए भी तत्वतः एक है। मानवीय मूल्यों में प्रेम एक ऐसा तत्व है जो व्यष्टि व समष्टि दोनों का एक सूत्र में पिरोकर रखता है। सभी सुखी रहें जैसी भावना हिन्दी कविता में दर्षनीय है

"औरों को हँसते देखो मनु, हँसों और सुख पाओ ।

अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ।

इन दिनों मनुष्य जीवन और इसके मूल्यों का अंकन करना भूल गया है। इसीलिए जीवन मूल्यों की उपेक्षा से उपजने वाली समस्याओं से पूरा संसार त्रस्त है। हिंसा, तनाव, लूटमार, आतंकवाद आदि ऐसी समस्यों है जो सुलझने के स्थान पर एलझती ही जा रही है। चारों ओर मूल्यों का क्षरण हो रहा है। चाहे वह सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक या शैक्षिक क्षेत्र हो । राष्ट्र कवि मैथिलीषरण गुप्त गिरते हुए भारतीय मूल्यों से क्षुब्ध और भविष्य के प्रति चिंतित हो कह उठते है

"आओ विचारे आज मिलकर ये समस्यायें सभी,

हम क्या थे और क्या हो गये।"

भारतीय संस्कृति की समन्ववादी प्रकृति के विकास की दृष्टि से हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल महत्वपूर्ण रहा है। साहित्य के इतिहास में इस काल का नामकरण भले ही भक्तिकाल किया गया हो, परन्तु भारतीय संसकृति के मुख्य तत्व, इसकी उदात्त भावनाओं को अभिव्यक्ति इस काल की रचनाओं में हुई है। दादू, कबीर, रैदास, जायसी, नानक, देव, सूर, तुलसी, आदि कवियों की रचनाओं में जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा स्थापित की गई । "सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति सार्वभौम सत्य के आधार पर प्रतिष्ठित धार्मिक भावना और दार्षनिक चिन्तनधारा के माध्यम से हुई है। कला, षिल्प, साहित्य और संगीत इन्हीं के अनुषांगिक उपलब्धियाँ है । इन सबका क्षेत्र विषाल मानव समाज है जिसकी प्रेरणा और प्रसाद से मनुष्य जीवन यापन करता है। हिन्दी काव्य भाषा और साहित्य परम्परा की जीवंतता का सबसे बड़ा प्रमाण है कि भक्तिकाल का जन्म हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष के साथ होता है और इतिहास इस संघर्ष का अनेक रूपों में चित्रण करती है पर जिसकी रचना में साम्प्रदायिक दृष्टि का संस्पर्ष भी नहीं होने पाता। "साहित्य को यह प्रकृति वास्तव में भारतीय संसकृति की प्रकृति है । जिस प्रकार विभिन्न जनगण के परस्पर मेल से भारतीय संस्कृति से समन्वयवादी चरित्र का विकास हुआ और इसमें विभिन्न जनगण की संस्कृति के तत्व अभिन्न रुप से घुल-मिलकर एक हो गये, उसी प्रकार हिन्दी साहित्य आरम्भ से ही विभिन्न धर्मों और समाज के सभी वर्गों के लोगों के जीवन और रचना की भाषा रही । "

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भक्तिकाल रचनात्मकता की दृष्टि से ही नहीं, भारतीय सांस्कृतिक एकता की दृष्टि से भी अन्यतम है। कबीर, जायसी, सरूदास एंव तुलसीदास ने अपने साहित्य में प्रेम की स्थापना की । जाति-पाति, छुआछूत एवं अमानवीयता के खिलाफ यह एक विराट उद्‌घोष था । जिसमें कवियों ने जनता से जुड़कर सामाजिक पवित्रता की स्थापना की ।

"जाति-पाति पूछै नही कोई, हरि को भजै तो हरि को होई ।। "

भक्ति आन्दोलन के सन्दर्भ में षिवकुमार मिश्र ने लिखा है "एक समग्र राष्ट्र के रुप में भारतवर्ष की खरी तथा सही पहचान कराने वाली अब तक दो ही ऐसी घटनाएँ हुई है, जिन्हें प्रायः सभी न महान तथा युगान्तकारी घटनाओं के रुप में रेखांकित किया है । इनमें से एक घटना का संबंध मध्यकाल से है तथा दूसरी का आधुनिक काल से ।

युग और व्यवस्थाओं के बदलने के साथ हमारी साहित्यिक और सांस्कृतिक अभिरुचियों, हमारी मान्यताएँ, हमारे विचार - विष्वास बदलते है और उनके अनुरुप साहित्य संस्कृति का भी रुप सामने आता है जो उनकी गतिषीलता उनकी जीवंतता और उनकी शक्ति का परिचायक है, किन्तु ऐसा नहीं है कि उनके भीतर जो स्थायी तत्व हैं वे समाप्त हो जाते है। भारतीय संस्कृति की चेतना और हिन्दी साहित्य का अंत संबंध रीतिकाल में अवष्य क्षीण दिखता है तो इसका तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों है । उत्तरदायित्व विहीन, विलासिता के वातावरण में उपजी श्रृंगार भावना नारी देह में सिमट गई थी। जैसे सब ओर से चोट खाकर किसी ओर रास्ता न पाकर बुद्धि घर के भीतर सिमट गई हो, जैसे जीवन के व्यापक क्षेत्रों में मनोविषेष का अवसर न मिलने के कारण मनोरंजन का एकमात्र साधन नारी देह की शोभाओं और चेष्टाओं के अवलोकन कीर्तन तक की सीमाबद्ध हो गया हो।" फिर भी इस काल में चिंतामणि, भूषण मतिराम और बिहारी जैसे समर्थ कवि हुए जिन्होंने संस्कृति चेतना को बनाये रखा । हिन्दी इतिहास का आधुनिक काल निष्चित रुप से सांस्कृतिक विमर्ष का काल है । भारतेन्दु युग में ही राष्ट्रीयता, सामाजिक चेतना के प्रसार में हिन्दी साहित्य के सम्पूर्ण परिवेष को प्रभावित किया । द्विवेदी युग, छायावाद और छायावादोत्तर में साहित्य और संसकृति का जनोन्मुखी रुप विकसित हुआ । औपनिवेषिक दासता, स्वाधीनता संग्राम के इस दौर में अयोध्या सिंह उपाध्याय, मैथिलीषरण गुप्त, रामनरेष, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा, महादेवी, निराला, सुमित्रानन्दन पंत, प्रसाद, दिनकर, मुक्तिबोध, धूमिल, नागार्जून, प्रेमचन्द, जैनेन्द्र आदि कवियों कथाकारों ने भारतीय संस्कृति और साहित्य को मनुष्यता के उदात्त मूल्यों से आबद्ध किया । राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य धारा के कवियों की राष्ट्रीयता को उभारने वाली रचनाओं ने नया वातावरण निर्मित किया । हिन्दी कविता उक ऐसे सुन्दर समाज की कल्पना करती है जहाँ सभी समान हो सबके हृदय एक हों।

" पुलकित तन हो मुकुलित मन हो, सरस और सक्षम जीवपन हो

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अन्न वस्त्र दा / सुखदा, शुभदा, प्राणों से भी बढ़कर प्यारी हिम किरीटिनी

जलधि पैंजनी / बने स्वर्ग ये भूमि प्यारी, अधर - अधर पर अमिताभ ताज हो

सतत अभ्युदित जन-जन प्रमुदित सर्व सुखद सुन्दर समाज हो ।।

हिन्दी गद्य को प्रेमचन्द जैसे अनेक रचनाकारों ने समाज के विभिन्न वर्गों और नारी मनः स्थिति से जोड़ा और समृद्ध किया। आजादी के पश्चात् इससे मोहभंग की स्थिति पतनषील राजनीति और सामाजिक दुरावस्था को नागार्जून, मुक्ति बोध, धूमिल श्री लाल शुक्ल आदि कवि - कथाकारों ने चित्रित किया। वर्तमान में भी रचनाकार अपनी रचनाओं से भारतीय संस्कृति को आत्मसात कर अपनी रचनाओं से हिन्दी साहित्य को समृद्ध कर रहे है। भारतीय संस्कृति को सामाजिक प्रवृत्ति मनुष्यता के प्रति नकारात्मक मूल्यों के प्रतिरोध की रही है और यही प्रवृत्ति हिन्दी साहित्य के सभी विधाओं में व्याप्त है । साहित्य सार्वकालिक और सावभौमिक है। इसमें भारतीय शाष्वत मूल्यों का संयोजन है, जो मानव जाति को दया, ममता, सौहार्द, विष्वबन्धुत्व जैसे अनेक मूल्यों से जोड़ने का विकल्प है। हिन्दी साहित्य एक तरफ जहा वर्तमान सिथति व परिवेष को प्रस्तुत कर उसके दुष्परिणामों का दिग्दर्षन कराता है, वही दूसरी तरफ मानवीय प्रेम के उदात्त आदर्ष को प्रस्तुत कर नयी मानवता की रचना करने की षिक्षा देता है।

"कोटि मनुजों में भरो ध्वनि सभ्यता को,

कि कोटि कण्ठों में बनी ध्वनि मनुष्यता की ।"

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण दर्पण है। यह न केवल ऐतिहासिक और पारंपरिक पहलुओं को संजोए रखता है, बल्कि आधुनिक परिवर्तनों और सामाजिक परिवर्तनों को भी दर्शाता है। इस अध्ययन का उद्देश्य हिंदी साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति की व्यापक और गहन समझ को विकसित करना है, जिससे समाज की विभिन्न परतों को बेहतर ढंग से समझा जा सके। भारत की समृद्ध संस्कृति और इसके विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए हिंदी साहित्य का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। यह न केवल हमें अतीत की झलक प्रदान करता है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की दिशा भी इंगित करता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 7, July- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सन्दर्भ संकेत

[1] साहित्य षिक्षा और संस्कृति आचार्य नरेन्द्र देव पृ० / 33
[2] ऐतरेय ब्राह्मण – 6-5-1
[3] भारतीय संस्कृति का विकास (वैदिक धारा) डा० मंगल देव शास्त्री - पृ0 - 4
[4] साहित्य, सिद्धान्त और समीक्षा सरनाम सिंह शर्मा - पृ0 - 19
[5] रामचरित मानव - तुलसीदास
[6] हिन्दी साहित्य का इतिहास नागेन्द्र - पृ0 79
[7] हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी - पृ0 43-44
[8] भक्ति आन्दोलन और काव्य - षिवकुमार मिश्र, भक्ति पृ0-15